प्रयागराज स्थित एक्यूप्रेशर शोध प्रशिक्षण एवं उपचार संस्थान के राष्ट्रीय सम्मेलन में माननीय अध्यक्ष का संबोधन

मुझे एक्यूप्रेशर शोध प्रशिक्षण एवं उपचार संस्थान के 24वें राष्ट्रीय सम्मेलन के अवसर पर आज आप सभी से मिल कर बहुत प्रसन्नता हुई है। इस राष्ट्रीय सम्मेलन में आए सभी प्रतिभागियों, एक्यूप्रेशर विशेषज्ञों, जो देश के अलग-अलग क्षेत्रों से आए हैं, उन सभी को मैं बहुत-बहुत शुभकामनाएं देता हूँ।

मुझे प्रसन्नता है कि आपका संस्थान देश में एक्यूप्रेशर पद्धति को लोकप्रिय बनाने तथा इस क्षेत्र में नए अनुसंधान और नवाचारों के ऊपर पिछले 27 वर्षों से काम कर रहा है। आपके प्रयासों का परिणाम है कि आज इस पद्धति को भारत ही नहीं, बल्कि पूरे विश्व में लोकप्रियता मिल रही है।

मैं आशा करता हूं कि आपके इस सम्मेलन में एक्यूप्रेशर जैसी उपयोगी उपचार विद्या के क्षेत्र में अधिक चर्चा, संवाद हुआ होगा।

प्राचीनतम लोकतंत्र भारत की संस्कृति में चर्चा, संवाद, विचार और मंथन से जो निष्कर्ष निकलता है, मंथन से जो अमृत निकलता है, उससे कल्याण होता है।

भारत भर से एक्यूप्रेशर चिकित्सा तकनीक और पद्धति पर काम करने वाले लोगों ने आपस में चर्चा की, संवाद किए, अपने-अपने अनुभव साझा किए और किस तरीके से उन अनुभवों के आधार पर उन्होंने लोगों को स्वस्थ किया, उन अनुभवों, बेस्ट प्रैक्टिसेज को अन्य डॉक्टर्स भी अपनाएंगे, ताकि हम इस पद्धति को और बेहतर बना सकें।

इस अवसर पर एक्यूप्रेशर की बेसिक तकनीक के साथ, एक्यूप्रेशर क्षेत्र में किए गए नए रिसर्च पर चर्चा हुई है। उन चर्चा, शोध, रिसर्च और उपचारों के आधार पर जो कुछ भी आपके अनुभव हैं, उन्हें किताबों के माध्यम से लिखा गया है और किताबों का विमोचन भी हुआ है।

आपके इस वर्ष के सम्मेलन का विषय संक्रमण से फैलने वाले रोगों के उपचार के साथ-साथ असाध्य कहे जाने वाले रोगों के उपचार की विशेष चर्चा है।

एक्यूप्रेशर एक प्राकृतिक चिकित्सा उपचार पद्धति है। अभी कुछ दिनों पहले विश्व नैचुरोपैथी दिवस मनाया गया था। हमारी ये वैकल्पिक उपचार पद्धतियां हमारी चिकित्सा व्यवस्था को समृद्ध बनाती है, सुदृढ़ बनाती है।

अपनी उपयोगिता और प्राकृतिक अनुकूलता के कारण एक्यूप्रेशर सहित नेचुरोपैथी आज पूरे भारत में ही नहीं, बल्कि पूरी दुनिया के अधिकतम देश इसे स्वीकार कर रहे हैं। मैं कई देशों में गया हूं, मैंने देखा है कि किस तरह से एक्यूप्रेशर, नेचुरोपैथी, प्राकृतिक चिकित्सा और योग-विज्ञान को वहां के लोगों ने जीवन का हिस्सा बनाया है।

मानसिक रोग, अवसाद, डायबिटीज, ब्लड प्रेशर जैसे कई रोग हमारी दिनचर्या, खान-पान एवं हमारी जीवनशैली के कारण पैदा हो रहे हैं, लेकिन उनका भी इलाज नेचुरोपैथी, आयुर्वेद और एक्यूप्रेशर चिकित्सा पद्धति में है। इसलिए ये वैकल्पिक चिकित्सा पद्धति पूरे देश में पर्याप्त शोध, रिसर्च के साथ प्रशिक्षित मैन पावर उपलब्ध करा रही है। विश्व में इसकी आवश्यकता बढ़ी है।

एक्यूप्रेशर पद्धति से कई लोगों के बहुत पुराने दर्द, पुरानी बीमारियां, विशेष रूप से कमर दर्द, पैर दर्द, गर्दन का दर्द, बहुत सारी बीमारियां एक्यूप्रेशर से ठीक होते हुए मैंने देखा है। इसका कोई साइड इफेक्ट भी नहीं है। इसलिए ऐसी चिकित्सा पद्धतियों की बहुत आवश्यकता है।

मुझे आशा है कि आपने इस प्राकृतिक तकनीक को अपनाने के लिए जो जन-जागृति अभियान चलाया है, इसका विशेष परिणाम निकलेगा। हमें गर्व है कि एक्यूप्रेशर चिकित्सा पद्धति स्वदेशी पद्धति है। हमारे आयुर्वेद में एक्यूप्रेशर चिकित्सा को मर्मज्ञान चिकित्सा के नाम से लिखा गया है। हमारे ऋषि, मुनि, संत और कर्म ज्ञानी इससे परिचित थे। एक्यूप्रेशर पद्धति में मर्म स्थानों का चयन करके इलाज करने की बेहतरीन पद्धति है।

वर्ष 1995 में, स्थापना से ही एक्यूप्रेशर शोध प्रशिक्षण और उपचार संस्थान, प्रयागराज एक्यूप्रेशर के क्षेत्र को विस्तार देने के लिए नित नए कार्य कर रहा है। मुझे जानकारी मिली है कि आपके संस्थान द्वारा हर वर्ष एक्यूप्रेशर चिकित्सा पद्धति पर राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया जाता है, सेमिनार आयोजित किये जाते है, ताकि आयुर्वेद, एक्यूप्रेशर, नेचुरोपैथी पद्धति का उपयोग अधिकतम लोग कर सकें। भारत का पहला एक्यूप्रेशर अस्पताल वर्ष 2002 में आपके यहां शुरू हुआ था, जिसमें प्रति दिन पांच सौ से अधिक लोगों का उपचार किया जाता है।

यह संस्था पूरे देश में चार सौ से अधिक उपचार केन्द्र चला रही है और नई तकनीक से लोगों का उपचार कर रही है। मुझे आशा है कि एक्यूप्रेशर शोध प्रशिक्षण एवं उपचार संस्थान द्वारा आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन एक्यूप्रेशर चिकित्सा पद्धति को और समृद्ध करेगा, सुदृढ़ करेगा। इस चिकित्सा प्रणाली के प्रति आम जनता में और ज्यादा विश्वास जगेगा।

इन्हीं शब्दों के साथ मैं एक्यूप्रेशर शोध प्रशिक्षण एवं उपचार संस्थान के इस राष्ट्रीय सम्मेलन के आयोजन के लिए आपको शुभकामनाएं देता हूं। मुझे विश्वास है कि इस सम्मेलन से निष्कर्ष व परिणाम निकलेंगे, पूरे भारत में ही नहीं, बल्कि पूरे विश्व में यह पद्धति और सशक्त होगी और समृद्ध होगी एवं आम जनता में इस पद्धति के प्रति और ज्यादा विश्वास पनपेगा। आप सभी को बहुत-बहुत शुभकामनाएं, बहुत-बहुत बधाई।